ISSN NO.2395-0692
International Journal of
Arts, Humanities and Management Studies

श्रीलंका के आर्थिक संकट का भारत पर प्रभाव

DR. SUPRIYA KUMARI

M. A. Ph.D (Political Science)

संक्षिप्त रूप –

दुनिया बदल रहा है। भारत भी बदल रहा है। वैसे तो बदलाव की बात करना आव यक नहीं है क्योंकि दुनिया कब नहीं बदली। वहरहाल भारत को विदे ी नीति के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए कि बदले विश्व की दिशा क्या है, बदलाव के प्रमुख अव्यव क्या है। राश्ट्रीय हितो की रक्षा के लिए इनकी पहचान और उनका सही आकलन जरूरी है। उससे ही विदे ी नीति को सही दि ा मिल सकती है। फिर भी विदे ी नीति क्रियान्वित करने की बात भी है। माननीय अटल जी को सरकार के दिनों को याद दिलाऊँ तो यह नि चत है कि सन् 1998 से लेकर 2004 तक के छः साल के भाासन काल के दौरान वेदै ाक मामलों में जो किया गया, उसे इतिहासकार सही नीतियों के रूप में गिनाते रहेंगे।

शब्द–कुंजी –

- श्रीलंका का आर्थिक संकट
- टासमान पर जरूरी जीजों की कीमते
- आयुक्त जनरल के नियुक्तिा
- देश में बढ़ता ऊर्जा भाक्ति
- जमाखोरी रोकने के उपाय
- चीन के कर्ज से डूबता श्रीलंका

ISSN NO.2395-0692

International Journal of
IJAHMS Arts, Humanities and Management Studies

अध्ययन का उद्देश्य :–

- विकट आर्थिक समस्याओं और श्रीलंका सरकार को आपतकाल का अध्ययन करना है।
- करेंसी की गिरती कीमत और विदे ी मुद्रा भण्डार भी श्रीलंका में क्यों और कैसे विवेचन करना है।
- श्रीलंका का मौजूदा आर्थिक संकट और निकट भविश्य की चुनौतियों का अवलोकन करना है।
- द्वीपीय दे । में खाध और अन्य आव यक वस्तुओं के संकट के मूल कारणों का वि लेशण करना है।
- श्रीलंका की आयात पर निर्भर के कारणों का मूल्यांकण करना है।
- भारत के लिए क्यो अहम है श्रीलंका के स्थितियों का अध्ययन करना।

भारत–श्रीलंका दोनों राष्ट्र न केवल एक साथ स्वतंत्र हुए, बल्कि राष्ट्रकुल, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एवं सार्क की समस्या ग्रहण की बल्कि हिन्द महासागर की अन्तर्राशट्रीय महत्ता को देखते हुए हिमतेक्ष तथा बंगतक्षेस जैसे संगठन की स्थापना की औपनिवेशिक स्वतंत्रता, सैन्य संगठनों का प्रतिरोध, निःशस्त्रीकरण, हिन्द महासागर को भाांति क्षेत्र घोषित कराने जैसे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर दोनों ने समान विचार भी रखे, लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है, वास्तव में भारत एवं श्रीलंका के मध्य विवाद की मुख्य समस्या भारतीय मूल के उन निवासियों को नागरिकता दिलाने से सम्बन्धित रही है जो बागवानी मजदूरों के रूप में ब्रिटिश शासकों द्वारा श्रीलंका लाए गए थे। इसके अतिरिक्त कच्चातिवू द्वीप पर अधिकार को लेकर उत्पन्न विवाद ने भी दोनों देशों के संबंधों को काफी क्षति पहुंचायी।

भारतीय मूल के निवासियों को लेकर विवाद श्रीलंका की आजादी के साथ ही प्रारम्भ हुआ। जब श्रीलंका वहाँ रह रहे प्रवासी भारतीयों का उत्तरदायित्व लेने से मुकर गया, दूसरी तरफ भारत की सरकार भी उन प्रवासी भारतीयों का वापस लेने में उत्सुक नहीं थी, इसके परिणामस्वरूप भारतीय प्रवासियों की एक बड़ी संख्या राज्यविहीन हो गयी, भारत सरकार यह चाहती थी कि श्रीलंका वहाँ रह रहे भारतीयों को पूर्ण नागरिकता प्रदान करे, हालांकि भारत ने उन प्रवासी भारतीयों को भारत वापस आने की अनुमति दे दी जो अपनी इच्छा से भारत लौटाना चाहते थे। आप्रवासी भारतीयों की समस्या के समाधान के लिए दोनों देशों की सरकारों के बीच अनेक स्तर पर वार्ताएं होती रही और क्रम ाः 1949 में नेहरू कोटलेवाला समझौता हुआ।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आर्थिक समस्याओं के मद्देनजर श्रीलंका सरकार ने आर्थिक आपात घोषित कर दिया। खाद्य कीमतों में अनियंत्रित बढोतरी हुई है। वहीं, करेंसी की गिरती कीमत, तेजी से खत्म होता विदेशी मुद्रा भंडार भी श्रीलंका के लिए सिरदर्द बनता जा रहा है। खाद्य आपूर्ति से लेकर अन्य आव यक वस्तुओं की सप्लाई को व्यवस्थित करने और वर्तमान संकट से निपटने के लिए राश्ट्रीय गोटाबाया राजपक्षे ने सेना को जिम्मा सौंप दिया है। श्रीलंका का मौजूदा आर्थिक संकट, निकट भविश्य की चुनौतियाँ और वहाँ के बिगड़ते हालात का भारत पर क्या असर होगा के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया।

श्रीलंका इन दिनों आर्थिक संकट से जूझ रहा है। हाल ही में इस द्वीपीय देश में खाद्य और अन्य आव यक वस्तुओं के संकट के कारण वित्तीय आपातकाल की घोशणा की गयी है। आयात के लिए विदेशी मुद्रा की कमी हो गयी और श्रीलंका अधिकांश खाद्य पदार्थों के लिए आयात पर ही निर्भर है। इन समस्याओं के मद्देनजर राश्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने चावल और चीनी सहित अन्य आव यक वस्तुओं की जमाखोरी रोकने के लिए सार्वजनिक सुरक्षा अध्यादे ा के तहत 30 अगस्त को आपातकाल की स्थिति घोशित कर दी। 30 अगस्त को आधी रात से देश में आपातकाल लागू है।

आसमान छू रही जरूरी चीजों की कीमतें

चीनी, चावल, प्याज और आलू की कीमतों में बेतहाशा बढ़ोतरी से लोग परेशान है। गिरती स्थानीय मुद्रा और उच्च वैि वक बाजार कीमतों के कारण अधिकांश आवश्यक वस्तुओं के दाम यहाँ आसमान छू लगे हैं। उपरोक्त वस्तुओं समेत दूध पाउडर और खाने के तेल के साथ ही मिट्टी के तल और रसाई गैस के दाम भी अनियंत्रित हो गये हैं। उनकी आपूर्त्ति भी कम हो गयी है। नतीजतन, दुकानों के बाहर लंबी लाइनें देखने को मिल रही हैं। आपूर्त्ति में कमी और मूल्य वृद्धि से लोगों में बहुत ज्यादा भय है कि न जाने कब, किन जरूरी वस्तुओं की कमी हो जाये एवं इनके दाम और बढ़ जायें। रिपोर्ट बताती हैं कि इसी डर से कई लोग बहुत ज्यादा दाम देकर ब्लैक में इन चीजों को खरीद रहे हैं।

कीमतों पर नियंत्रण के लिए आयुक्त जनरल की नियुक्ति

राष्ट्रीय गोटाबाया राजपक्षे सरकार ने सेना के एक शीर्श अधिकारी, मेजर जनरल निउनहेला को आवश्यक सेवाओं के आयुक्त जनरल के रूप में नियुक्त किया है। इस नव–नियुक्त आयुक्त का दायित्व जमाखोरों–आयातकों, व्यापारियों और खुदरा विक्रेताओं के पास से जमा खाद्य पदार्थों को जब्त करना है। सरकार द्वारा प्रेस के लिए जारी एक बयान में कहा गया है कि अधिकृत अधिकारियों को धान, चावल, चीनी सहित अन्य आवश्यक खाद्य पदार्थों के स्टॉक को खरीदकर उन्हें रियायती दर पर जनता को उपलब्ध कराने का अधिकार होगा।

ये वस्तुएँ सरकार द्वारा निर्धारित दाम पर या आयातित वस्तुओं पर लगनेवाले सीमा भाुल्क के मूल्य के आधार पर उपलब्ध करायी जायेंगी। सरकार के इस कदम का उद्देश्य बाजार की अनियमितताओं पर रोक लगाना है। क्योंकि उसका मानना है कि निजी आयतकों द्वारा जमाखोरी करने के चलते ही देश में आव यक खाद्य पदार्थों की कमी हुई है। सरकार ने खाद्य पदार्थों की जमाखोरी रोकने के लिए भारी जुर्माने का प्रावधान भी किया है।

दूसरी ओर, आयातक आपूर्ति की कमी से बचने के लिए सरकार से वित्तीय आपातकाल हटाने की गुहार लगा रहे हैं। लेकिन लगता है कि आम नागरिकों का गुस्सा झेल रही सरकार फिलहाल आयातकों की नहीं सुनने वाली।

बढ़ सकता है ऊर्जा संकट

श्रीलंका केवल खाद्य पदार्थो के लिए ही आयात पर निर्भर नहीं है, बल्कि गैस और पेट्रोल भी वह आयात करता है। यदि समय रहते यह संकट हल नहीं हुआ, तो आनेवाले समय में ऊर्जा संकट का भी सामना करना पड़ सकता है। इसे देखते हुए सरकार ने लोगों से ईंधन का उपयोग संयम से करने का आग्रह किया है। ताकि देश अपनी विदेशी मुद्रा का उपयोग आवश्यक दवाइयों और कोरोना टीके को खरीदने के लिए कर सके।

जमाखोरी रोकने के लिए कठोर कार्रवाई

खाद्य आपातकालीन समस्या के तत्काल निवारण के उपाय के तौर पर सरकार जमा की गयी वस्तुओं को जब्त कर रही है। क्योंकि, जमाखोरों का मकसद वस्तुओं के दाम बढ़ने पर उन्हें बढ़ी कीमत पर बेचना होता है। ऐसा होने से रोकने के लिए सरकारी अधिकारियों को निजी गोदामों में छापेमारी करने को कहा गया है। इस कार्रवाई के प्रभारी सैन्य अधिकारी का कहना है कि जब्ती अभियान के तहत उन्होंने कोलंबो के बाहर रखी गयी 13,000 टन से अधिक चीनी का पता लगाया है। वहीं सरकार ने कहा है कि वह आयातकों को वस्तुओं का उचित मूल्य देगी और जब्त खाद्य पदार्थों को नियंत्रित कीमतो पर बाजार में उचित मूल्य देगी और जब्त खाद्य पदार्थों को नियंत्रित कीमतों पर बाजार में उतारेगी। हालांकि छोटे दुकान मालिक चिंतित है कि इन सरकारी उपायों से उन्हें नुकसान उठाना पड़ेगा। क्योंकि वे उन दामों पर सामान बेचते हैं, जिन दामों पर उन्हें थोक व्यापारी देते हैं और सरकार के कदम से उनका लाभ बहुत कम हो जायेगा।

आइएमएफ से आपातकालीन राहत पैकेज

श्रीलंका में जारी संकट को देखते हुए हाल ही में अंतरराश्ट्रीय मुद्रा कोश ने उसे 787 मिलियन डॉलर का आपातकालीन राहत पैकेज प्रदान किया है।

श्रीलंकाई रुपये के अवमूल्यन का कारण

श्रीलंका की अर्थव्यवस्था बीते कई वर्षें से अपने ही कर्ज के बोझ तले दबती जा रही है। जारी मंदी ने सरकार के लिए ऋण भुगतान और वित्त आयात को बनाये रखना और भी कठिन बना दिया है। इस वर्श अमेरिकी डॉलर की तुलना में श्रीलंकाई मुद्रा में 7.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई है। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी के साथ राश्ट्रीय मुद्रा के अवमूल्यन का अर्थ है कि श्रीलंका न केवल आयात भुगतान के लिए संघर्श कर रहा है, बल्कि अपने ऋण भुगतान के लिए भी संघर्शरत है। इन हालातों को देखते हुए आपातकाल से कुछ दिन पूर्व ही सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका ने स्थानीय मुद्रा को मजबूत बनाने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि की है।

दवाओं की कमी से जूझ रहे अस्पताल

विदेशी मुद्रा भंडार में कमी और स्थानीय मुद्रा के अवमूल्यन से ऐसे हालात बन चुके हैं कि आयातक अब उसी मुद्रा (डॉलर) का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, जिसके उपयोग से वे विदेशों से खाद्य पदार्थ और दवा साहित अन्य उत्पाद खरीदते रहे हैं। परिणामस्वरूप, कई अस्पताल उन आव यक दवाओं और उपकरणों को खरीदने के लिए संघर्श कर रहे है जिनकी उन्हें जरूरत है। इससे रोगियों के उपचार में दिक्कत आ रही है और इनमे कोविड–19 के रोगी भी शामिल है। यह संकट ऐसे समय में आया है, जब कोरोना महामारी से देश की हालत खराब है और संक्रमण के कारण एक दिन में दो सौ से अधिक लोगों की मौत हो रही है।

2.8 बिलियन डॉलर पर आ गया विदेशी मुद्रा भंडार

बैंक के आंकड़ों के अनुसार, श्रीलंका का विदे ाी मुद्रा भंडार जुलाई के अंत में गिरकर 2.8 बिलियन डॉलर पहुँच गया। जबकि नवंबर 2019 में यह 7.5 बिलियन डॉलर था। श्रीलंकाई रुपया भी नवंबर 2019 के मूल्य की तुलना में अपने मूल्य का 20 प्रतिशत से अधिक खो चुका है। श्रीलंका में विदेशी मुद्रा भंडार में कमी के प्रमुख कारणों में से एक कोविड–19 महामारी भी है। महामारी ने पर्यटन उद्योग को तबाह कर दिया है। वि व यात्रा और पर्यटन परिशद के अनुसार, 2019 में इस उद्योग ने जीडीपी में 10 प्रति ात से अधिक का योगदान दिया था। बीते वर्श श्रीलंका की अर्थव्यवस्था में रिकॉर्ड 3.6 प्रति ात की गिरावट दर्ज हुई।

कारण

- देश के सकल घरेलू उत्पाद में 10 फीसदी से अधिक का योगदान देनेवाला और विदेशी मुद्रा की आमद का सबसे बड़ा जरिया पर्यटन उद्योग कोरोना वायरस महामारी के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ है।
- विदेशी मुद्रा के सबसे बड़े स्रोत के बंद हो जाने के कारण आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति हेतु श्रीलंका को विदेशी मुद्रा की खरीद के लिए बड़ी रकम अदा करनी पड़ रही है। इसकी वजह से श्रीलंकाई रुपये की कीमत इस वर्श आठ प्रति ात तक कम हो गयी है।
- श्रीलंका की आयात पर अत्यधिक निर्भरता है, यहाँ तक कि आव यक खाद्य आपूर्ति के लिए आयात करना पड़ता है। इसलिए खाद्यान्न कीमतो में तेजी से इजाफा हुआ है और रुपये की कीमत गिर रही है।
- सरकार ने कृशि में रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल को प्रतिबंधित कर दिया है, इससे कृशि उत्पादन में काफी गिरावट देखी जा रही है।
- इस साल की शुरूआत में राजपक्षे ने सार्वजनिक घोशणा की थी कि श्रीलंका दुनिया का पहला देश होगा, जहाँ कृशि क्षेत्र पूरी तरह ऑर्गेनिक हो जायेगा।

श्रीलंकाई चाय विषेशज्ञ हरमन गुणारत्ने जैसे कई विषेशज्ञों का मानना है कि जैविक खेती की ओर जबरन दबाव चाय और अन्य फसलों के उत्पादन को आधा कर सकता है। इससे खाद्यान्न संकट वर्तमान संकट से भी बदतर हो सकता है।

भारत की भूमिका

एक संप्रभुता सम्पन्न राश्ट्र होने के नाते श्रीलंका अपनी आंतरिक समस्या और संकट का हल खुद ही ढूंढ सकता है और वह प्रयास में जुटा हुआ भी है। कुछ दिन पूर्व राश्ट्रपति चन्द्रिका कुमारतुंगा ने यह प्रस्ताव भी किया था कि यदि लिट्टे प्रमुख प्रभाकरण भाांति योजना से सहमत हों तो उन्हे जाफना का मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है।

श्रीलंका की समस्या से भारत का संबंध कई अर्थों में है। एक तो यह कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन और दक्षेस में भारत और श्रीलंका में आपसी सहयोग होने के नाते यह स्वाभाविक है कि भारत वहाँ भाांति चाहता है ताकि पड़ोसी देश को अपना समुचित विकास करने का अवसर मिले। दूसरा यह कि श्रीलंका में मौजूद तमिल मूल के लोगों के प्रति भारत के तमिलों में भी चिंता है और तीसरा यह कि श्रीलंका की सरकार भारत से मदद भी चाहती है परन्तु भारत अपने पिछले कड़वे अनुभवों के आधार पर यह साफ कह चुका है कि वह श्रीलंका की समस्या में सैन्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता। मानवीय आधार पर जहाँ तक मदद करने की बात है तो भारत इसके लिए तैयार है। भारत लिट्टे से कोई बातचीत नहीं कर सकता।

लिट्टे से नार्वे की बातचीत चल रही है उससे भारत अवगत भी है। श्रीलंका सरकार को भाांति स्थापित करने की दिशा में भारत सहायता कर सकता है। भारत चाहता है कि कोई समाधान ढूंढा जाए परन्तु उस समाधान के प्रति पहले श्रीलंका में तो आम सहमति हो। 1987 में जो समाधान ढूंढा गया था उसे तत्कालीन जयवर्द्धने की सरकार ने तो स्वीकार कर लिया था और उसका परिणाम भी अच्छा नहीं रहा। आज भी यदि कोई समाधान ढूंढा जाये और श्रीलंका का विपक्ष राजी नहीं हो तो फिर वह समाधान कारगर नहीं हो जाएगा।

श्रीलंका के आर्थिक संकट का भारत पर प्रभाव

श्रीलंका के प्रति भारत की 'पड़ोसी पहले' की नीति श्रीलंका 'इण्डिया फर्स्ट' विदेश एवं सुरक्षा नीति से संबद्ध रही है। अमेरिका और ब्रिटेन के बाद भारत श्रीलंका के लिए तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है। श्रीलंका के 60 फीसदी से अधिक निर्यात को भारत–श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते का लाभ मिलता है। यह समझौता 2000 में प्रभाव में आया था। भारत श्रीलंका में मुख्य निवे ाक भी है। भारत की कोलंबो के साथ विकास साझेदारी हमेशा मांग आधारित रही है, इससे सामाजिक अवसंरचना जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता और औद्योगिक विकास आदि भाामिल है।

भारत–श्रीलंका के रिश्तों में उतार–चढ़ाव

इस साल की शुरूआत में दोनों देशों के आपसी रिश्तों में गिरावट देखी गयी। फरवरी महीने में श्रीलंका घरेलू परिस्थितियों का हवाला देते हुए कोलंबों बंदरगाह पर अपने ईस्ट कंटेनर टर्मिनल–प्रोजेक्ट के लिए भारत और जापान के साथ हुई त्रिपक्षीय साझेदारी से पीछे हट गया। हालांकि, बाद में सार्वजनिक–निजी भागीदारी समझौते के तहत अडानी पोर्ट और स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड को वेस्ट कोस्ट टर्मिनल ऑफर किया गया। पिछली जुलाई में भारतीय रिजर्व बैंक ने श्रीलंका के सेंट्रल बैंक के साथ करेंसी–स्वैप समझौता किया था, यह सार्क करेंसी स्वैप फ्रेमवर्क 2019–22 के तहत 400 मिलियन डॉलर की निकासी के लिए किया गया था।

कर्ज के बोझ में दबता जा रहा है श्रीलंका

श्रीलंका की नाजुक तरलता की स्थिति ने कर्ज की समस्या को और भी गंभीर बना दिया है। साल 2020 में सार्वजनिक ऋण–जीडीपी अनुपात 109.7 प्रतिशत रहा। इसकी सकल वित्तीय मांग अधिक रही, जो जीडीपी की 18 प्रति ात तक पहुँच गयी। जुलाई, 2021 में एक बिलियन डॉलर के अंतरराश्ट्रीय सॉवरेन बॉन्ड सेटलमेंट के बाद इसका सकल आधिकारिक भंडार घटकर 2.8 बिलियन डॉलर हो गया, जो 1.8 महीने के आयात के बराबर है। साल 2020 में कर्ज–जीडीपी अनुपात 62 प्रति ात रहा। यह मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्र पर भारित है। अगले दो वर्शों में 2.7 बिलियन विदे ाी मुद्रा कर्ज का भुगतान करना होगा।

चीन के कर्ज में डूबता जा रहा है श्रीलंका

श्रीलंका के सार्वजनिक क्षेत्र को जून 2019 तक दिया गया चीनी कर्ज केंद्रीय बैंक के कुल बाहरी ऋण का 15 प्रतिशत रहा। इस प्रकार चीन श्रीलंका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय लेनदार है। कर्ज चुकाने में असमर्थता के कारण श्रीलंका को 2017 में इंबनटोटा बंदरगाह को चीन को 99 साल की लीज पर सौंपना पड़ा था। फिर भी, श्रीलंका विदेशी कर्ज के बोझ को दूर करने के लिए चीनी ऋण पर भरोसा करता रहा। चीन का श्रीलंका को निर्यात 2020 में भारत से होनेवाले निर्यात करता रहा। चीन का श्रीलंका को निर्यात 2020 में भारत से होनेवाले निर्यात को भी पार कर गया। श्रीलंका की रणनीतिक भौगोलिक स्थिति होने के कारण चीन ने वहाँ 2006 से 2019 के बीच 12 बिलियन डॉलर का भारी–भरकम निवे ा किया है।

निश्कर्श

श्रीलंका का मौजूदा आर्थिक संकट उसे बीजिंग की ओर झुकाव के लिए और मजबूर करेगा। यह ऐसे समय में हो रहा है, जब भारत का अफगानिस्तान और म्यांमार के साथ राजनयिक संबंध कठिन दौर से गुजर रहा है। बांग्लादे ा, नेपाल और मालदीव जैसे अन्य दक्षिण एशियाई देश बड़े स्तर पर बुनियादी परियोजनाओं हेतु वित्तीयन के लिए चीन का रुख कर रहे है। 'पड़ोसी पहले' नीति के तहत भारत के लिए श्रीलंका काफी महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर में अपने सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए भारत को सावधानी पूर्वक फैसले लेने की जरूरत है। कोलंबो बंदरगाह भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत के 60 प्रति ात ट्रांस–शिपमेंट कार्गो के लिए यह अहम है।

सन्दर्भ स्रोत

i. J. R. Childs – "Foreign Policy the substance of foreign relation" p. 110

ii. George Modelsia – "Foreign policy & The System of activities by states for changing the behaviours of other states and for Adjusding their an activities to in internations environment." p. 185

iii. Schleccher – "Foreign policy refers to the actions of Government officials to influence human behavior and the juelisduct of their own state" p. 89

iv. Noman Hill – "Foreign policy & the substance of nation's efforts to promote its interests vis other nation" p. 46

v. Panel ford and Lincain – "The key elements the process by which a state translates its broadly conceived goals and anlests into conceived into concrete courses of action and to attain these objectives and preserves its interests" p. 65

vi. Dr. Mahendra Kumar – "Foreign policy is a thought cut course of action the for activing objectives in foreign relations in diciated bythe ideology of national interests" p. 103-106

vii. Hittmacklinder – "Who rules Eastern Europe Commands The Heat Land who rules the heart land commands the world Island (Europe-Africa) who rules the world Island commands the world"

viii. Raymond W. Hiker – "Hunger is the most important factor in World today. The Challenge of the 20th Centuary is race between mass and starvation"

ix. Morgenthan – "Nations self-sufficient is food are better placed these nation which importance food"

x. Clemenicent - "One drop of oil is which or drop of blood in our Soliders"

www.ijahms.com

xi. Sachelicher – "As long as men are needed for production and fighting other elements being equal, the State with a larger number of men and women to perform such tasks shal be more capable of becoming a major power"

xii. Mussolin – "let us we frank course leves what are 40 millanitations compared with 90 millian Germans and 200 millian slaves"

xiii. Aldans Haxley – "Over population leads to insecurety and unrest"

xiv. Rosseau – "Technological changes can after the military and economic capabilities of a society and the its status and the role in the international system"

xv. Trivedi K. D. – "Perspectives development administration, Delhi, 1987"

xvi. Verma, Sona – "The effect of policy reform on the Indian Economic a macroeconometric Analyze Indian Journal of Economics 74 (294) January p. 373-94"

xvii. Weimer Davindel and R Vinding Aidous – "Policy analysis concepts and prache englwood chiffs H.J. prentice-Hall 1989"

xviii. World Development report 1994 infrastructre or development oxford, Oxford University Press 1994

xix. Yadav Ram Kumar Ram – Beurocracy and alternations is an industrial organization, New Delhi, Radha Publication, 1993

www.ijahms.com